लखनऊ संस्करण
वर्ष-05, अंक - 268
सोमवार, 26 जुलाई, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु*
लखनऊ, गोरखपुर, झांसी और वाराणसी से प्रकाशित

दैनिक भास्कर

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

For epaper → www.updainikbhaskar.com

अधिक लाभ के लिए उगाए टिशू कल्चर तकनीक से उत्पादित केला : डॉ. त्रिपाठी

रोगों से बचाव के लिए खेत में पौधरोपण से पूर्व भूमि को ट्राइकोडरमा से उपचारित करें

भास्कर न्यूज

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह एवं अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ धर्मराज सिंह के निर्देशन में विश्वविद्यालय के उद्यान विज्ञान एवं फल विज्ञान के प्राध्यापक एवं अध्यक्ष डॉ वीके त्रिपाठी ने किसानों को सलाह दी है। कि वह अपने खेत में टिशू कल्चर तकनीक से तैयार केले के पौधों को ही रोपित करें, क्योंकि यह पौधे विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्त होने के साथ मातृ पौधे के समान उच्च गुणवत्ता वाले होते हैं, जिनकी वृद्धि और फलत एक समान रहते हुए 12 से 14 महीने में एक पौधे से लगभग 30 किलो औसत की दर गहर प्राप्त हो जाती है। डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि पौधों का रोपण अगस्त माह तक सफलतापूर्वक किया जा सकता है। किसान भाई ध्यान रखें कि आप जिस खेत में रोपण कर रहे हैं उस खेत में पानी का ठहराव नहीं होना चाहिए और जल निकास का उचित प्रबंधन भी अति आवश्यक है। विभिन्न भूमि जनित रोगों से बचाव के लिए खेत में पौधरोपण से पूर्व भूमि को ट्राइकोडरमा से उपचारित अवश्य कर लेना चाहिए और रोपण में ग्रांड नैने (जी 9) प्रजाति का ही प्रयोग करें और समतल खेत में 6x6 फीट या 8 x 4 फीट की दूरी पर पौधों का रोपण करके 1- 2 माह के बाद तनों पर हल्की मिट्टी चढ़ा देते हैं, तथा निकलने वाले सभी सकर्स को ऊपर से काटकर हटाते रहते हैं। पौधे को 5 किलोग्राम गोबर की खाद, 250 ग्राम नत्रजन, 300 ग्राम फास्फोरस और 300 ग्राम पोटाश प्रति पौधा देते हैं। गोबर की खाद, फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा पौध रोपण के समय दे देते हैं। नत्रजन की आधी मात्रा पौधरोपण के समय और आधी मात्रा गहर निकलते समय देते हैं। निराई-गुड़ाई करके खरपतवारों से फसल को मुक्त रखते हैं। सर्दी की ऋतु में जब पौधों की वृद्धि कम होती है, उस समय मटर, आलू, सरसों, गेंदा, गैलार्डिया इत्यादि फसलों का रोपण करके अंतःसस्यन के रूप में अन्य फसलें भी उगाई जा सकती है। फसल में क्लोरेरियम विल्ट का प्रकोप होने पर कॉपर ऑक्सिक्लोराइड की 2ग्राम मात्रा को एक लीटर पानी में घोलकर प्रति पौधा आधा से एक किलो मात्रा प्रति पौधा की दर से डाल दें। गहर में जब 10 से 12 पंजे बन जाएं तब नर फूल को हाथ से तोड़ कर हटा दें और चाकू का प्रयोग करें तो उसको प्रत्येक गहर को काटने के बाद स्टेरलाइज करना अति आवश्यक होता है अन्यथा यह विषाणु रोगों के संवहन का कारण बन जाते हैं। इस प्रकार से एक गहर पुष्पन के बाद 90 दिन में तैयार हो जाती है। फलियों को बनाना बीटल से बचाने के लिए पौधों के आसपास खरपतवारों को निराई गुड़ाई करके हटाते रहें। अधिक आक्रमण होने पर फल पौधे पर रोगोर या अन्य किसी सिस्टेमेटिक रसायन के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। जब फलियां पूर्ण रूप से गोल हो जाएं तब उनको पूरी गहर तोड़कर 800 पीपीएम हाइपरिल के घोल में आधा घंटा डूबो कर रखने के बाद निकाल कर, कमरे में 24 घंटे रखने पर सभी फलियां एक समान दर से पूर्ण रूप से पीली पक जाती है। इस प्रकार किसान भाइयों को। एकड़ क्षेत्रफल में लगभग 1250 पौधों के रोपण और देखभाल पर 80-90,000 का खर्च आता है और फलों की बिक्री के द्वारा चार से पांच लाख की आय हो जाती है तथा लगभग 300000 शुद्ध लाभ 12-14 महीने में किसानों को प्राप्त हो जाता है।

कानपुर। सोमवार • 26 जुलाई • 2021

राष्ट्रीय सहारा

टिशू कल्चर केले की खेती अधिक लाभदायी

सीएसए के उद्यान एवं फल विज्ञान के प्राध्यापक व अध्यक्ष डॉ. वीके त्रिपाठी की किसानों के लिए सलाह

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि ने किसानों को अब अधिक लाभ के लिए टिशू कल्चर तकनीक से तैयार केले की खेती को प्रोत्साहित करना शुरू किया है। विवि वैज्ञानिकों का दावा है कि टिशू कल्चर से तैयार केले के पौधे विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्त होने के साथ ही मातृ पौधे के समान उच्च गुणवत्ता वाले होते हैं। इसकी वृद्धि व फल एक समान रहते हुए 12 से 14 महीनों में एक पौधे से लगभग 30 किलो औसत की दर से गहर प्राप्त हो सकती है।

विवि के उद्यान विज्ञान एवं फल विज्ञान के प्राध्यापक एवं अध्यक्ष डॉ. वीके त्रिपाठी ने बताया कि टिशू कल्चर केले के नये पौधों का रोपण अगस्त माह तक किया जा सकता है। यह ध्यान रखना जरूरी है कि जिस खेत में

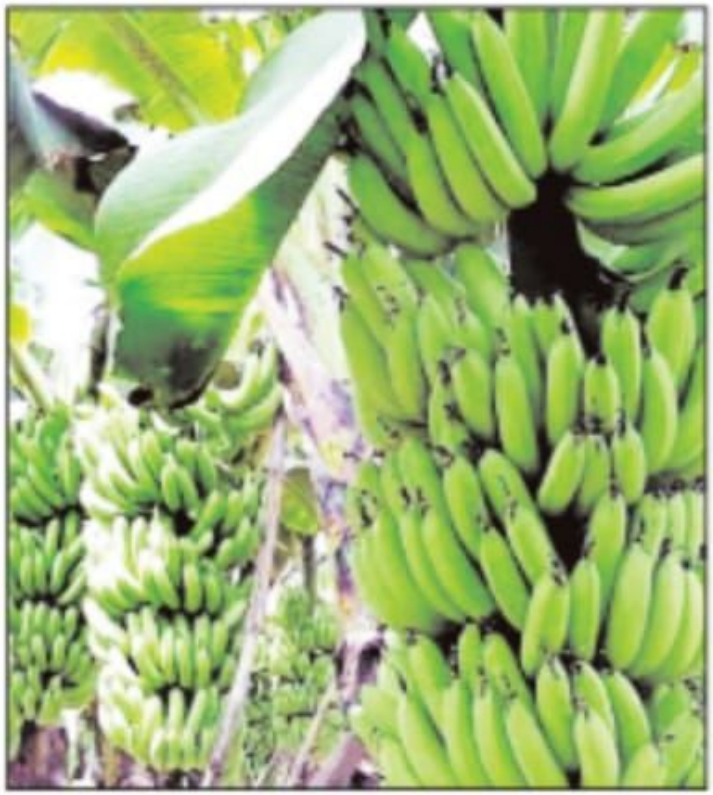

रोपण किया जाये, उस खेत में पानी का ठहराव नहीं होना चाहिए।

जल निकासी का उचित प्रबंध भी अति आवश्यक है। विभिन्न भूमिजनित रोगों से बचाव के लिए खेत में पौधरोपण से पूर्व भूमि को ट्राइकोडरमा से उपचारित अवश्य लेना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया है कि रोपण में ग्रांड नैने (जी9) प्रजाति का ही प्रयोग करें व समतल खेत में समुचित दूरी पर पौधों का रोपण करके एक से दो माह बाद तनों पर हल्की मिट्टी चढ़ा दें। इसके साथ ही निकलने वाले सभी सकर्स को ऊपर से काटकर हटाते रहें। पौधे को 5 किग्रा गोबर की खाद, 250 ग्राम नत्रजन तथा 300-300 ग्राम फास्फोरस व पोटाश प्रति पौधा की खुराक देने से पौधे बेहतर बढ़ते हैं।

गोबर की खाद, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा पौधरोपण के समय ही दे दें। नत्रजन की आधी मात्रा पौधरोपण के समय व आधी मात्रा गहर निकलते समय देते हैं। निराईगुड़ाई करके खरपतवारों से फसल को मुक्त रखना भी जरूरी है।

केले के साथ लें अन्य फसल का लाभ : डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि सर्दी के ऋतु में जब पौधों की वृद्धि कम होती है, उस समय मटर, आलू, सरसों, गेंदा, गैलार्डिया आदि फसलों का रोपण करके अन्य फसलों का लाभ भी उठाया जा सकता है।

पुष्पन के बाद 90 दिनों में तैयार होती है केले की गहर : केले की गहर पुष्पन के बाद 90 दिनों में तैयार हो जाती है। फलियां पूर्ण रूप से गोल हो जाने पर उनको पूरी गहर तोड़कर 800 पीपीएम इथरिल के घोल में आधा घंटा डुबो कर रखने के बाद 24 घंटे तक कमरे में रख दें। इससे सभी फलियां एक समान रूप से पीली पक जाती हैं।

1 एकड़ में रोपण पर 80-90 हजार का खर्च : 1 एकड़ क्षेत्रफल में लगभग 1250 पौधों के रोपण व देखभाल पर ₹ 80 से 90 हजार तक खर्च आता है व फलों की बिक्री से चार से पांच लाख की आय हो जाती है। इस तरह 12 से 14 महीनों में प्रति एकड़ किसानों को लगभग ₹ 3 लाख का शुद्ध लाभ प्राप्त हो सकता है।

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक
www.shashwattimes.com

अधिक लाभ हेतु उगाए टिशू कल्चर

तकनीक से उत्पादित केला : डॉ वीके त्रिपाठी

शाश्वत टाइम्स कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह एवं अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ धर्मराज सिंह के निर्देशन में विश्वविद्यालय के उद्यान विज्ञान एवं फल विज्ञान के प्राध्यापक एवं अध्यक्ष डॉ वीके त्रिपाठी ने किसानों को सलाह दी है। कि वह अपने खेत में टिशू कल्चर तकनीक से तैयार केले के पौधों को ही रोपित करें, क्योंकि यह पौधे विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्त होने के साथ मातृ पौधे के समान उच्च गुणवत्ता वाले होते हैं, जिनकी वृद्धि और फलत एक समान रहते हुए 12 से 14 महीने में एक पौधे से लगभग 30 किलो औसत की दर गहर प्राप्त हो जाती है। डॉक्टर त्रिपाठी ने बताया कि पौधों का रोपण अगस्त माह तक सफलतापूर्वक किया जा सकता है। तथा निकलने वाले सभी सकर्स को ऊपर से काटकर हटाते रहते हैं। पौधे को 5 किलोग्राम गोबर की खाद, 250 ग्राम नत्रजन, 300 ग्राम फास्फोरस और 300 ग्राम पोटाश प्रति पौधा देते हैं। गोबर की खाद, फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा पौध रोपण के समय दे देते हैं। नत्रजन की आधी मात्रा पौधरोपण के समय और आधी मात्रा गहर निकलते समय देते हैं। फसल में फ्यूजेरियम विल्ट का प्रकोप होने पर कॉपर ऑक्सिक्लोराइड की 2ग्राम मात्रा को एक लीटर पानी में घोलकर प्रति पौधा आधा से एक किलो मात्रा प्रति पौधा की दर से डाल दें। गहर में जब 10 से 12 पंजे बन जाएं तब नर फूल को हाथ से तोड़ कर हटा दें और चाकू का प्रयोग करें तो उसको प्रत्येक गहर को काटने के बाद स्ट्रेलाइज करना अति आवश्यक होता है अन्यथा यह विषाणु रोगों के संवहन का कारण बन जाते हैं। इस प्रकार से एक गहर पुष्पन के बाद 90 दिन में तैयार हो जाती है। फलियों को बनाना बीटल से बचाने के लिए पौधों के आसपास खरपतवारो को निराई गुड़ाई करके हटाते रहे। अधिक आक्रमण होने पर फल पौधे पर रोगोर या अन्य किसी सिस्टेमेटिक रसायन के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। जब फलियां पूर्ण रूप से गोल हो जाएं तब उनको पूरी गहर तोड़कर 800 पीपीएम इथरिल के घोल में आधा घंटा डूवो कर रखने के बाद निकाल कर, कमरे में 24 घंटे रखने पर सभी फलियां एक समान दर से पूर्ण रूप से पीली पक जाती है।

सोमवार • 26.07.2021 अमर उजाला | 02
kanpur.amarujala.com

सीएसए के डॉ. एसके सिंह को उत्तरप्रदेश रत्न

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मानव चिकित्सालय के डॉ. एसके सिंह को रविवार को लखनऊ में उत्तरप्रदेश रत्न सम्मान 2021 से नवाजा गया है। इनको यह सम्मान सामाजिक कार्यों और कोरोना में की गई सेवाओं के लिए मिला है। कार्यक्रम का आयोजन महावीर सेना एवं दुर्गा सेना की ओर से किया गया। मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री बृजेश पाठक, कैबिनेट मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह और संरक्षक पूर्व आईपीएस सूर्य कुमार मौजूद रहे। (संवाद)

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress https://worldkha

अंक : 298 कानपुर न

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

पीवी सिंधु का शानदार आगाज महज 29 मिनट मे जीता पहला मैच पेज 8

25 जुलाई 2021, रविवार www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarexpress.com

सीएसए के उद्यान विभाग एवं फल विज्ञान के अध्यक्ष ने दिए टिप्स

अधिक लाभ के लिए उगाए टिशू कल्चर तकनीक से उत्पादित केलाः डॉ. त्रिपाठी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के उद्यान विज्ञान एवं फल विज्ञान के प्राध्यापक व अध्यक्ष डॉ. वीके त्रिपाठी ने किसानों को सलाह दी है कि वह अपने खेत में टिशू कल्चर तकनीक से तैयार केले के पौधों को ही रोपित करें क्योंकि यह विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्त होने के साथ ही मातृ पौधे के समान उच्च गुणवत्ता वाले होते हैं जिनकी वृद्धि और फसल एक समान रहते हुए 12 से 14 महीने में एक पौधे से लगभग 30 किलो औसत की दर गहर प्राप्त हो जाती है।

डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि पौधों का रोपण अगस्त माह तक सफलतापूर्वक किया जा सकता है। किसान ध्यान रखें कि आप जिस खेत में रोपण कर रहे हैं, उसमें पानी का ठहराव नहीं होना चाहिए और जल निकास का उचित प्रबंधन भी अति आवश्यक है। विभिन्न भूमि जनित रोगों से बचाव के लिए खेत में पौधरोपण से पहले भूमि को ट्राइकोडरमा से उपचारित अवश्य कर लेना चाहिए और रोपण में ग्रांड नैने (जी 9) प्रजाति का ही प्रयोग करें। साथ ही समतल खेत में 6×6 फीट या 8 × 4 फीट की दूरी पर पौधों का रोपण कर 1 से 2 माह के बाद तने पर हल्की मिट्टी चढ़ा देते हैं तथा निकलने वाले सभी सकर्स को ऊपर से काटकर हटाते रहते हैं। पौधे को 5 किलोग्राम गोबर की खाद, 250 ग्राम नत्रजन, 300 ग्राम फास्फोरस और 300 ग्राम पोटाश प्रति पौधा देते हैं। गोबर की खाद, फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा पौध रोपण के समय दे देते हैं। नत्रजन की आधी मात्रा पौधरोपण के समय और आधी मात्रा गहर निकलते समय देते हैं। निराई-गुड़ाई करके खरपतवारों से फसल को मुक्त रखते हैं। सर्दी की ऋतु में जब पौधों की वृद्धि कम होती है, उस समय मटर, आलू, सरसों, गेंदा, ग्लैडियोलस इत्यादि फसलों का रोपण कर अंतः सस्यन के रूप में अन्य फसलें भी उगाई जा सकती हैं। फसल में फ्यूजेरियम विल्ट का प्रकोप होने पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड की 2 ग्राम मात्रा को एक लीटर पानी में घोलकर प्रति पौधा आधा से एक किलो मात्रा प्रति पौधा की दर से डाल दें। गहर में जब 10 से 12 पंजे बन जाएं तब नर फूल को हाथ से तोड़ कर हटा दें और चाकू का प्रयोग करें तो उसको प्रत्येक गहर को काटने के बाद स्टेरलाइज करना अति आवश्यक होता है अन्यथा यह विषाणु रोगों के संचरण का कारण बन जाते हैं। इस प्रकार से एक गहर पुष्पन के बाद 90 दिन में तैयार हो जाती है। फलियों को बनाना बीटल से बचाने के लिए पौधों के आसपास खरपतवारों को निराई-गुड़ाई करके हटाते रहें। अधिक आक्रमण होने पर फल पौधे पर रोगोर या

अन्य किसी सिस्टेमेटिक रसायन के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। जब फलियां पूर्ण रूप से गोल हो जाएं तब उनको पूरी गहर तोड़कर 800 पीपीएम इथरिल के घोल में आधा घंटा डुबो कर रखने के बाद निकाल कर, कमरे में 24 घंटे रखने पर सभी फलियां एक समान दर से पूर्ण रूप से पीली पक जाती है। इस प्रकार 1 एकड़ क्षेत्रफल में लगभग 1250 पौधों के रोपण और देखभाल पर 80 से 90,000 का खर्च आता है और फलों की बिक्री से चार से पांच लाख की आय हो जाती है। लगभग 3 लाख रुपए का शुद्ध लाभ 12 से 14 महीने में किसानों को हो जाता है। मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने यह जानकारी दी।

26 July_Jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस

janexpresslive

लखनऊ, सोमवार, 26 जुलाई, 2021, वर्ष : 12, अंक : 279, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

www.janexpresslive.com/epaper

टिशू कल्चर तकनीक से तैयार केले के पौधों को रोपित करने की सलाह

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह एवं अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धर्मराज सिंह के निर्देशन में विश्वविद्यालय के उद्यान विज्ञान एवं फल विज्ञान के प्राध्यापक एवं अध्यक्ष डॉ. वी. के. त्रिपाठी ने किसानों को अपने खेत में टिशू कल्चर तकनीक से तैयार केले के पौधों को ही रोपित करने की सलाह दी क्योंकि यह पौधे विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्त होने के साथ मातृ पौधे के समान उच्च गुणवत्ता वाले होते हैं। डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि पौधों का रोपण अगस्त माह तक सफलतापूर्वक किया जा सकता है तथा पानी के ठहराव वाले खेत में रोपण नहीं करना चाहिए और जल निकासी का उचित प्रबंध आवश्यक है। उन्होंने कहा कि गोबर की खाद, फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा पौध रोपण के समय दी जाती है तथा नत्रजन की आधी मात्रा पौधरोपण के समय और आधी मात्रा गहर निकलते समय देते हैं निराई- गुड़ाई करके खरपतवारो से फसल को मुक्त रखते हैं। उन्होंने बताया कि किसानों को एक एकड़ क्षेत्रफल में लगभग 1250 पौधों का रोपण और देखभाल पर 80 से 90 हजार का खर्च आता है और फलों की बिक्री के द्वारा 4 से 5 लाख की आय प्राप्त होती है तथा लगभग 3 लाख रुपए का शुद्ध लाभ किसानों को प्राप्त हो जाता है।